Rs. 5/-

Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 7, July 2013

Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 7, July 2013 वर्ष 18, अंक 7, जुलाई 2013

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र
Assistant Editors / सहायक संपादकगण
Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता
Surekha Sachdeva
सुरेखा सचदेव
Production Officer / उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार
Illustrator / चित्रकार
Partha Sengupta
पार्थ सेनगुप्त

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, New Delhi.

Typeset at Nath Graphics, 1/21, Sarvapriya Vihar, New Delhi-110016

Contents/सूची

धानी खेत, रंगीन आँगन	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	2
Operation Mouth	Manoj Das	5
एक वफादार मित्र वृक्ष एवं जाहिल दोस्त इनसान	साबिर खान	7
जरूरत है	अनन्या मोहन	9
A Zoo for Phuki	Dash Benhur	10
चलता पत्थर	मुकेश नौटियाल	13
A Gentle Clock	Prabir Kumar Pal	15
A Festival of Reading for Children		16
सफेद कबूतर	कामना सिंह	18
The Great Indian Mathematical Wizard	Bano Sartaj Kazi	20
अनोखी सजा	बागान सरकार	22
किसी को भी छोटा न समझो	रश्मि कान्डेयांग	24
A Trip to Moon	R.N. Kobra	25
पापा, कब आओगे?	मुकेश शर्मा	27
The Dinosaurs	Sudha Puri	28
कहानी पोस्टकार्ड की	तपेश भौमिक	30
भागा चोर उचक्का!	शंकर सुल्तानपुरी	31
बंद आँखों की कलाकारी	आइवर यूशिएल	32

***Editorial Address* / संपादकीय पता**

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को नि:शुल्क वितरित किया जाता है।

India as the Focus Country at AFCC 2014

India will be the Focus Country in the Asian Festival of Children's Content (AFCC) 2014 at Singapore. Organised annually by the National Book Development Council of Singapore (NBDCS), this is one of the major events of children's literature in the world. The decision to project India as the Focus Country in AFCC 2014 was taken in the Board of Advisors' Meeting of AFCC on 28 May 2013 which was attended by, amongst others, Manas Ranjan Mahapatra, Editor of NBT's National Centre for Children's Literature.

Malaysia was the Focus Country for this year's AFCC held at the National Library Board, Singapore from 24- 29 May 2013. The Malaysian show included an Illustrators' Corner, several interactive sessions and talks by authors, editors and illustrators, book launch programmes, exhibition of children's books, a Rights Table and a Malaysian Cultural Evening.

The Indian show in 2014 will project the contemporary Indian publishing and authorship for children as well as the state of children's literature in the country in a multi-cultural and multi¬lingual situation. The AFCC 2014 is scheduled to be held at National Library Board, Singapore from 30 May-4 June 2014 and will have more than 150 sessions on various aspects of publishing of children's contents. The Indian stand in this year's AFCC showcased more than 100 select children's books. The overwhelming response for Indian children's books is expected to increase manifold in the AFCC 2014 with India as the Focus Country.

धारावाहिक 'सात समुंदर'

धानी खेत, रंगीन आँगन

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

नारायणन ने तो यूँ ही पोती को तैरना सिखा दिया। आगे के लिए शायद कुछ सोचा भी नहीं था, पर अब गायत्री पर भी तैराकी का नशा छा गया था। मुर्गा बाँग देना भले ही भूल जाए, पर प्रतिदिन भोर होते ही पूछती, "दद्दा, कब पंपा में तैरने को चलोगे?"

देखते-देखते पाँच-छह साल बीत गए। गर्मियों की छुट्टियों में वह तैरने जाती, नारायणन उसके साथ रहते।

हर साल देखते-देखते इट्टुकेट्टु मल्लाह कभी जाल सीते-सीते तो कभी अपनी मछलियों को खैंची में भरते-भरते कह देता, "गुरु जी, आपकी पोती ने तो मजे में तैरना सीख लिया है।"

अगस्त का महीना खत्म होने को है। आज से ओणम का उत्सव है। सुबह से गायत्री की अम्मा अनंत व्यस्त है। अपने घर के सामने पुक्कलम यानी रंगोली बनाना, चावल एवं नारियल के तरह-तरह के व्यंजन पकाना, पुट्टू, दही और केले से कालन, दही और हरी सब्जियों से ओलन, फिर ताड़ के रस से कलप्पम। मीठे में एलायप्पम... कितने सारे काम हैं!

एक जमाना था, जब ओणम के उत्सव दस दिनों तक चलते थे। आजकल तो बस चार दिनों में सिमटकर रह गया है सब कुछ। किसान अपने पसीने से धान पैदा करता है और इन्हीं दिनों उस सोने जैसे धान को काटकर वह खलिहानों में रखता है। ओणम इस नई जिंदगी के आरंभ का संगीत है। कोचीन, कोट्टयम जैसे शहरों में इन दिनों केरल की प्रसिद्ध नौका-दौड़ भी आयोजित होती है।

केरल में भिन्न-भिन्न रूपों में भगवान विष्णु की ही पूजा होती है। तिरुवनंतपुरम के पद्मनाभस्वामी के मंदिर में अनंत शय्या में भगवान लेटे हुए हैं, त्रिवांकुर राजपरिवार इनके उपासक हैं। लक्ष्मी जी पैर के पास बैठी हैं और शेषनाग अपने फनों से छत्र का निर्माण कर उनके सिर के पास कुंडली मारकर बैठा है।

विष्णु के ही एक अवतार ऋषि परशुराम ने समुद्र गर्भ से केरल की भूमि का उद्धार किया और इसे ब्राह्मणों को दान कर दिया। उन्होंने ही भगवान धर्मास्था के पाँच मंदिर बनवाए, तमिलनाडु की सीमा पर चार मंदिर बसे हैं। ये हैं—अकानकोविल, अर्यकावु, कुलाथुपुजा और सबरी मलाई। पाँचवाँ मंदिर पेरियार नदी के किनारे है।

कहते हैं ओणम के उत्सव में असुर राज महाबली अपने प्रजाजनों से मिलने पृथ्वी पर आते हैं। आज भी मलयालम भाषी उनकी न्यायपरता की प्रशंसा करते नहीं अघाते।

महाबली ने देवताओं को परास्त कर स्वर्ग, मर्त्य, पाताल पर अपना अधिकार जमा लिया था। जैसा कि बार-बार हुआ है देवगण बैकुंठ में जाकर विष्णु के सामने गिड़गिड़ाने लगे, ''प्रभु, हमें मुसीबत से बचाओ!''

देवराज ने भी हाथ जोड़कर कहा, ''हमारी लाज रख लो। हम देवता होकर इस तरह मारे-मारे फिरें?''

दान देने में असुरराज महाबली की ख्याति थी, अतः भगवान विष्णु ने इसी बात का सहारा लेकर उनसे छल किया। एक छोटे-से वामन का रूप धारण कर सिर पर छाता और हाथ में पोथी लेकर वे महाबली की राजसभा में पहुँच गए।

महाराज ने पूछा, ''हे वामनावतार, आपको क्या चाहिए?''

वह तो बस इसी ताक में थे। वे झट से माँग बैठे, ''त्रिपाद भूमि मुझे दिलाने का कष्ट करें।''

अर्थात उस वामन के केवल तीन बार कदम रखने से जितनी जमीन आ जाए उतनी ही उन्हें चाहिए।

महाबली ने कहा, ''तथास्तु!''

वामन तुरंत अपने असली रूप में आ गए। उनके एक पैर के नीचे समूचा स्वर्ग आ गया, दूसरे पैर के नीचे पूरी पृथ्वी आ गई। उन्होंने हुंकार देकर पूछा, ''अब बताओ, तीसरा कदम कहाँ रक्खूँ?''

महाबली ने नतमस्तक होकर कहा, ''मेरे माथे पर प्रभु।''

भगवान विष्णु ने फिर उनसे कहा, ''तो फिर जा, तू पाताल में जाकर अपना राजपाट बसा।'' इस तरह देवराज को तो पुनः खोया हुआ राज्य मिल गया, पर उन्हें पाताल चले जाना पड़ा।

तब महाबली ने हाथ जोड़कर कहा, ''प्रभु, मेरी भी एक विनती रख लो।''

''बता, तेरी कामना क्या है?''

''वर्ष में कम-से-कम एक बार मैं अपनी प्रजा से मिलने आ सकूँ।''

भगवान ने भी कहा, ''तथास्तु!''

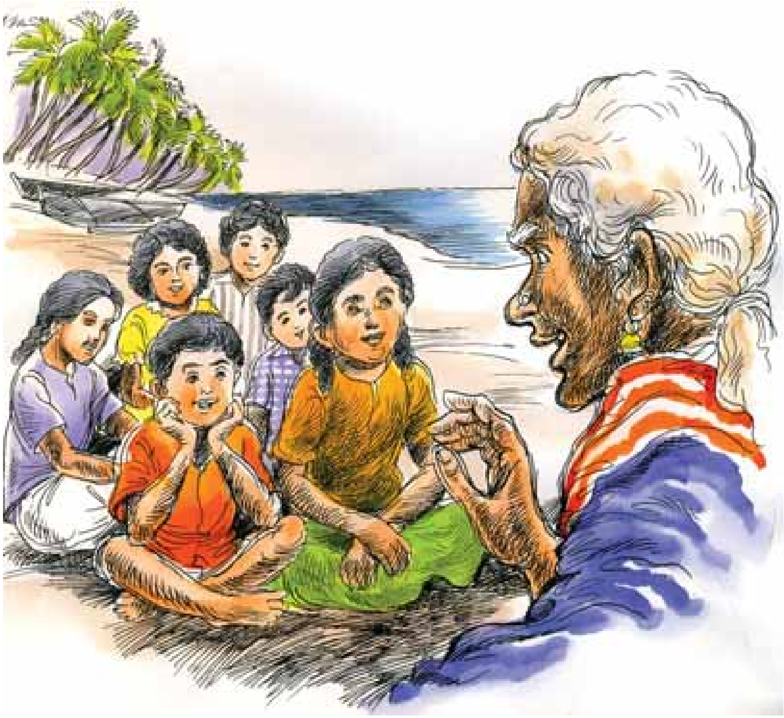

तरह-तरह के व्यंजन बने थे-अविअल, कलान ओलना। इन्हें केले के पत्ते पर परोसा गया। कलप्पम भी नारायणन को काफी पसंद था। आज के दिन अछूतों को भोजन दान में दिया जाता है। परयन और पुलयन, जो सालभर खेतों में काम करते हैं और केवल कांजि अर्थात भात का माड़ और मरचीनी के कंद खाकर दिन गुजार लेते हैं उन्हें भी आज अच्छी-अच्छी चीजें खाने को नसीब होती हैं। मजे की बात तो यह है कि एक समय था जब पुलयन ऊँची बिरादरी वालों के करीब 120 फुट की दूरी तक आ सकते थे, पर परयनों को तो इसकी भी इजाजत न थी। वे बस 150 फुट तक ही आ सकते थे। खैर, आज जमाना बदल गया है। गायत्री को ये बातें मालूम भी नहीं।

तभी हर साल महाबली अपने प्रजाजनों से मिलने आते हैं। ओणम का यह सारा मेला-ठेला, उत्सव, फूलों की रंगोली 'अथपु', 'पुक्कलम' सब उनके आगमन के लिए ही तो हैं!

आज भी महाबली के स्वागत के लिए सारे गाँव की औरतें मुँह से आवाज निकाल रही थीं। इसे कुरावा कहते हैं। यह बताने के लिए कि उनके आने से वे कितने खुश होंगे, चारों ओर से 'लू-लू' की ध्वनि आ रही थी। महाबली को उनके घर पहुँचने में कोई दिक्कत न हो इसलिए वे रास्ते भर पत्तियाँ और फूल छिड़कते जाती हैं।

नारायणन, गायत्री सब दोपहर का भोजन कर चुके थे। दही, केले और हरी सब्जियों के

दोपहर को नारायणन ने पोती से कहा, "चल, पंपा के किनारे चलते हैं। तैराकी प्रतियोगिता, नौका दौड़-सब देखा जाएगा।"

छोटी गायत्री भी मचल उठी। पुंटु उतारकर उसने नया फ्रॉक पहन लिया, दोनों निकल पड़े।

(क्रमशः ...)

From NBT's Treasure Trove

Operation Mouth

Manoj Das

Long long ago there was a king who had a good old minister. Never had a king known a wiser minister.

But one day the minister told the king that it was time for him to retire. He must devote his last days to plenty of dozing and snoozing.

It so happened that the minister had three young sons, all of whom looked equally bright and dutiful.

"If retire you must, my dear friend, then let me choose one of your sons to succeed you. It should be the eldest one, I suppose; what do you say?" the king asked his minister.

"That depends, my Lord, on what you expect of your minister. If you want daredevil, my eldest son, no doubt, should serve you well. If you want a clever man for the position, your choice should fall on my second son. And if you wish to have a man of truth, my youngest son should suit the post best," replied the minister.

"How can you be so precisely sure about the characters of your sons? Can you prove your opinion about each of them to be correct?" demanded the king.

"I hope, I can, my Lord," replied the minister.

"Really, I would like you to do that!" said the king, growing quite curious.

"Very well, my Lord," said the minister after a pause. "I will give one single instruction to all the three. Let us see the way each one works it out," said the minister.

He then summoned all his sons into a room. The king watched them from a hidden alcove.

"Listen, my sons," said the minister in a tone that was as grave as a tiger's growl. "At the centre of the royal garden stands a very special rose plant. I want each of you to go and pluck a rose each from it. Take your mission seriously. I should warn you of one danger thought. Plucking flowers from that particular plant is strictly forbidden. If you are caught, you ought to be able to escape punishment by using your mouths – I repeat – your mouths only."

It was twilight. The sons bowed to their father and took leave of him. They entered the garden and stealthily

approached the tree. But no sooner had they plucked the roses than they were caught by some alert guards.

The eldest son at once gave out a piercing cry and bared his teeth in a bid to bite the hand of the guard who caught him. The frightened guard loosened his grip, allowing the young man to make good his escape.

The second son threw the rose into his mouth and pretended innocence.

But the youngest son remained calm and let himself be led to the king.

"I know, my Lord, that it was forbidden plant. But I had no doubt in my mind about one thing: when you know that it was your wise minister who had asked me to pluck the flower, you would feel convinced that that there must be some very sound reason behind it," the youngest son told the king.

"See, my Lord," said the minister, "each of the three, when caught, had used his mouth, for I had instructed them to do so. But each one had done so in his own way, according to his nature. One has used it violently, one has used it cleverly, and one has used it truthfully."

The amused king smiled and said, "Right, my dear minister, but all the three are worthy in their own ways. Your eldest son can become officer in the army and the second one can serve as my adviser. But your youngest son, the wise one, should step into the position you are vacating."

(From NBT Publication: A Bride inside a Casket and Other Tales)

मेरा पन्ना

एक वफादार मित्र वृक्ष एवं जाहिल दोस्त इनसान

साबिर खान

एक छोटा लड़का था, जिसकी आयु करीब 4-5 साल रही होगी, जबकि दूसरा था एक छोटा नीम का पेड़। दोनों में दोस्ती हो गई। पेड़ घर के आँगन में ही था। दोनों बड़े होते चले गए। वो लड़का नीम के पेड़ में समय-समय पर पानी व खाद देता रहा। नीम का पेड़ काफी बड़ा हो गया। वह लड़का भी जवान हो गया। उसकी शादी भी हो गई। जब गर्मियों के दिन आए तो दोनों ही पति-पत्नी उस नीम के पेड़ के नीचे छाँव में बैठते और आराम करते। सावन के महीने में पत्नी सहेलियों के साथ खूब झूला झूलती और सावन के गीत गाया करती।

उस लड़के की बूढ़ी माँ थी। माँ ने कहा कि बेटा, जो पास वाला खेत है हमारा, उसमें भी नीम के पेड़ लगाओ तो खेत में हरियाली होगी और घर में खुशहाली आएगी। तो जब घरवाले पेड़ में बरसात के समय निबोलियाँ लगीं तो उन्होंने कुछ निबोलियाँ खाईं और उनकी गुठलियाँ खेत में बो दीं। अब काफी सारे नीम के पेड़ हो गए, व बगीचा-सा लग गया। अब नीम के पेड़ों की शाखाओं पर पक्षी आने शुरू हो गए। रात्रि में वे अपने-अपने घोंसलों में सो जाते। पक्षी जो बीट करते थे उससे खाद बन जाता। इस खाद को खेतों में

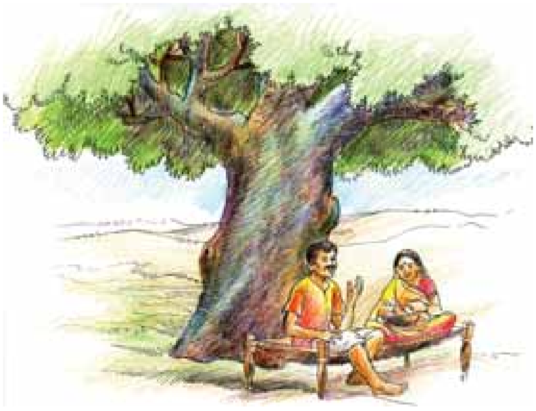

डालते जिससे काफी अच्छी फसल होती थी। नीम के पेड़ों की बदौलत वह परिवार धीरे-धीरे काफी संपन्न हो गया एवं उनकी गरीबी दूर हो गई।

एक दिन उस लड़के की माता जी, जो काफी बूढ़ी हो गई थीं, को बुखार आ गया। वृद्धा माँ ने लड़के से कहा कि पाँच कोंपलें (यानी नई पत्तियाँ) नीम के पेड़ से तोड़कर लाओ और काली मिर्च के भी पाँच दाने लेकर आओ। लड़के ने बूढ़ी माँ को कहे मुताबिक कोंपलें व काली मिर्च लाकर व उन्हें पीसकर दे दी। माँ ने लड़के के सामने ही इसे खाया। खाने के कुछ देर बाद ही बूढ़ी माँ का बुखार उतर गया और वह ठीक हो गईं। लड़का बड़ा खुश हुआ। किसी डॉक्टर

को भी नहीं दिखाना पड़ा और पैसे भी खर्च नहीं हुए।

कुछ समय तक परिवार खूब संपन्नता से चलता रहा। मगर वह लड़का अब आलसी होता चला जा रहा था और पेड़ों की देखभाल भी कम होती चली गई। वह लड़का दिन-प्रतिदिन गरीब होता चला गया। यहाँ तक कि रोटी के भी लाले पड़ने लग गए।

एक दिन वह लड़का पेड़ से बोला, ''मित्र, मैं अब क्या करूँ? रोटियों के लाले पड़ रहे हैं।'' पेड़ ने जवाब में कहा कि मेरी छोटी-छोटी टहनियों को काट लो और काटकर बाज़ार में बेच आओ। वहीं से अनाज लाकर रोटियाँ बनाकर खाओ।

अब नीम के पेड़ का मित्र यानी वह लड़का और आलसी होता चला गया और लालच में आ गया। धीरे-धीरे उसने सारे ही पेड़ काटकर टहनियाँ बेच दीं। बाद में जब टहनियाँ भी खत्म हो गईं तो फिर पेड़ से पूछा कि अब क्या करूँ दोस्त। पेड़ ने कहा कि मेरी मोटी-मोटी शाखाएँ भी काटकर बेच आओ और अपना गुजारा करो। उस लड़के ने बड़े-बड़े डालें भी काटकर बेच दिए। उसने सभी पेड़ों के साथ ऐसा ही किया।

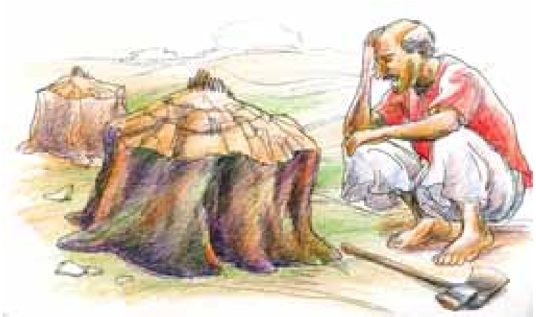

अब गर्मियों का मौसम आ गया। अब उन्हें धूप व लू सताने लगी। एक बार फिर से भुखमरी की नौबत आ गई। तो फिर नीम मित्र से बोला, ''अब क्या करूँ?'' तब नीम ने कहा कि मेरा तना भी काटकर बाज़ार में बेच आओ। तो उस लड़के ने लालच में आकर धीरे-धीरे सभी पेड़ों के तने भी बेच दिए। अब सारे ही तने खत्म हो गए तो पेड़ से लड़का बोला, ''मित्र, अब क्या करूँ?''

अब तो छाया भी नहीं रही, तने भी समाप्त हो गए। अब तो सिर्फ पेड़ मित्र का ठूँठ ही शेष रह गया था। ''अब मित्र, मैं तेरी किसी भी तरह से मदद नहीं कर सकता। अब मेरे ठूँठ के ऊपर सर रख लो और मर जाओ। तुम्हारे लालच का यही अंजाम है। अगर तुम लालच में नहीं आते तथा और अधिक पेड़ लगाते तो काफी ईंधन मिलता, पर्यावरण शुद्ध रहता; खाद, औषधियाँ मिलतीं सो अलग। अधिक पेड़ होने से वर्षा भी अधिक होती, जिससे देश, गाँव में हरियाली, खुशहाली आती एवं सभी को अधिक वर्षा होने से स्वच्छ पानी मिलता। अब तो मैं सिर्फ एक ठूँठ ही हूँ। मैं ऐसे लालची दोस्त की कुछ मदद नहीं कर सकता।'' आखिर वह इनसान तबाह व बरबाद हो गया। अधिक लालच ने उसका यह हाल किया।

गाँव-बिरार
पो.ऑ.-सबलाना
तहसील-कामाँ, जिला-भरतपुर (राजस्थान)

मेरा पन्ना

जरूरत है

अनन्या मोहन

जरूरत है जरूरत है
सबको एक–दूसरे की जरूरत है
जैसे मम्मी को पापा की जरूरत है
वैसे ही पापा को मम्मी की
जरूरत है।

जरूरत है जरूरत है
सबको एक–दूसरे की जरूरत है
जैसे कि दादा जी को अपने डंडे
की जरूरत है
वैसे ही दादी जी को अपने चश्मे
की जरूरत है।

जरूरत है जरूरत है
सबको एक–दूसरे की जरूरत है
जैसे मुझे अपने पेन की जरूरत है
वैसे ही तन्नी को अपने पेंसिल
की जरूरत है।

जरूरत है जरूरत है
सबको एक–दूसरे की जरूरत है
लेकिन सबसे ज़्यादा सबको प्यार
की जरूरत है।

डी.एल.डी.ए.वी. मॉडल स्कूल
पीतमपुरा
दिल्ली–110034

A Zoo for Phuki

Dash Benhur

There was a small kingdom in the middle of an enormous desert, ruled by a king with gigantic moustaches. He wore a huge silk turban on his head; a long, gleaming sword hung at his waist and on his feet were pointed *nagra* shoes set with precious stones. He had a jewelled ring on each of his ten fingers and a long, thick rope of pearls around his neck.

The king had only one child — a little girl. She was as soft as a flower and as bright as gold. Her eyes sparkled like glass marbles and her lips were like rose petals. She was the apple of his eye.

His love had spoilt her and made her stubborn. Whatever she wanted she had to have it at once, or she would get into a sulk, refusing to eat or speak. She would be bubbling with laughter at one moment and boiling with anger at another. But her father never wanted to see her sad. He would do anything to make her happy. Her name was Phuki.

The king had got all kinds of wonderful toys for Phuki from every part of the world. There were piles of books with shiny covers for her to read – story books, song books, picture books.

Phuki loved to read books. Sometimes she would roll with laughter as she read a funny story. She would pick up a book and run to her father and read out to him a story she had enjoyed. The father and daughter would then have a hearty laugh together. But she would cry bitterly if a story was sad, or get into a dark mood and sit quietly.

And so Phuki passed her days – playing, laughing, singing and roaming in her garden. Sometimes she would jabber away to her father and he would listen to her fondly.

Among the books that Phuki read were books about animals. All kinds of animals – tigers, lions, giraffes, zebras, chimpanzees; books about birds and fishes and snakes and insects. They all had beautiful coloured pictures showing the creatures which were being described.

Reading these books she fell in love with the animals. She wanted to see all the animals that she had read about, but unfortunately there were no animals in the desert country where she lived – only a few rats and lizards.

"Father, I want to see these wonderful animals that I have been reading about," she told her father. At once the king summoned his prime minister "Look here!" he ordered the prime minister. "The princess wants to see all the animals whose pictures appear in her books. Make arrangements at once for her to see them all!"

Now, what the prime minister would do? It wasn't possible to take the princess to all the countries where these animals were to be found. Neither were there any zoos where she could see them. Finally, he hit upon a plan.

The prime minister sent word to all the famous artists in the country. When they arrived, he told them to paint large pictures of animals. The pictures were to be so life-like that one would feel that one was really looking at animals inside a jungle.

The pictures were painted. The prime minister told his servants to get a long strip of paper and paste the pictures over it, one after the other — the bear after the tiger, the leopard after the bear, and so on. The strip of paper was wound tightly around a big wooden drum.

The drum was placed inside a large wooden box and a handle was fitted to the box. When the handle was turned, the drum inside the box would rotate and the pictures pasted on the strip of paper would appear one by one.

The prime minister's men made an opening in the front of the wooden box and fitted a piece of thick glass in the opening. If the viewer put his eyes close to the opening and turned the handle, he could see the animals through the glass lens.

The animals would appear one by one, look at the viewer and disappear. They were completely life-like. No one could imagine that they were looking at pictures, not real animals.

"Your Majesty!" the prime minister said to the king when everything was ready. "All the arrangements have been made. The princess can see all the animals that she wants to see, right here in the palace. She need not go anywhere."

Phuki and the king stood in front of the wooden box, close to the lens. The prime minister himself turned the handle; the wooden drum began to rotate and the pictures of the animals could be seen through the glass lens.

Phuki was delighted and she clapped her hands with joy. "Father!" she asked "How did you get all these animals inside the box?"

The king looked at the prime minister.

The prime minister said to Phuki, "Your Highness! This is a new kind of magic. We call it 'science'. When you will read all your books, you will also learn this magic!"

dashbenhur@yahoo.com

चलता पत्थर

मुकेश नौटियाल

शेरा दो साल का हो गया। अभी तक वह माँ का लाया शिकार खा रहा था।

एक दिन शेरनी माँ ने कहा, ''अब तुम बड़े हो गए हो। शिकार करना सीखो।''

शेरा तैयार हो गया। पहली बार वह शिकार करने निकला था।

सबसे पहले एक हिरण दिखा। हलचल सुनते ही वह सरपट भाग निकला। शेरा समझ गया कि हमला छुपकर करना चाहिए।

फिर वह आगे बढ़ा। उसको एक जंगली सूअर झाड़ियों के बीच नज़र आया। वह झाड़ियों की आड़ में दुबककर सूअर का इंतज़ार करने लगा। सूअर कुछ करीब आया, लेकिन तभी उसके नथुने तन गए। उसको शेरा की गंध मिल गई थी। उसने पलटी खाई और भाग खड़ा हुआ।

शेरा फिर आगे बढ़ा। वह अब घने जंगल के बीच था। वहाँ विशाल हाथी थे और ऊँचे जिराफ भी। शेरा उनके सामने बौना था। उसने चुपचाप आगे बढ़ना ठीक समझा। चलते-चलते वह जंगल से निकलकर घास के लंबे-चौड़े मैदान में आ गया। भूख से अब वह बेहाल हो रहा था। प्यास से उसका गला सूख रहा था। खाना तो मिला नहीं, पानी की तलाश में वह तालाब की ओर बढ़ने लगा।

अचानक उसके कदम रुक गए। उसने गौर से देखा। एक अजीब-सा जीव बेहद सुस्त चाल में जमीन से चिपककर चल रहा था।

'यह सुस्त है और छोटा भी। आसानी से पकड़ में आ जाएगा।' शेरा ने सोचा और कंधे झुकाकर वह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। एकदम करीब आकर उसने उस जीव पर झपट्टा मारा।

लेकिन यह क्या! शेरा अपना जबड़ा सहलाने लगा। उस पथरीली चीज से उसके दाँत बुरी तरह टकरा गए थे।

उसने गौर से देखा, हाथ, न पैर। सिर, न पूँछ। बस! एक गोल-सा पत्थर।

'लेकिन..., यह चल कैसे रहा था!' शेरा सोच में पड़ गया। उसने उसको इधर-उधर लुढ़काया, फिर सूँघा।

वह एक बेजान पत्थर निकला।

निराश शेरा मुँह लटकाए वापस घर लौट आया। घर पहुँचकर उसने चलते पत्थर की कहानी माँ को सुनाई। माँ ने टका-सा जवाब दिया, ''पत्थर चल नहीं सकते।''

''लेकिन... मैंने उसको चलते हुए देखा है...!'' शेरा ने कहा।

''कहाँ है वह पत्थर...?'' माँ ने पूछा।

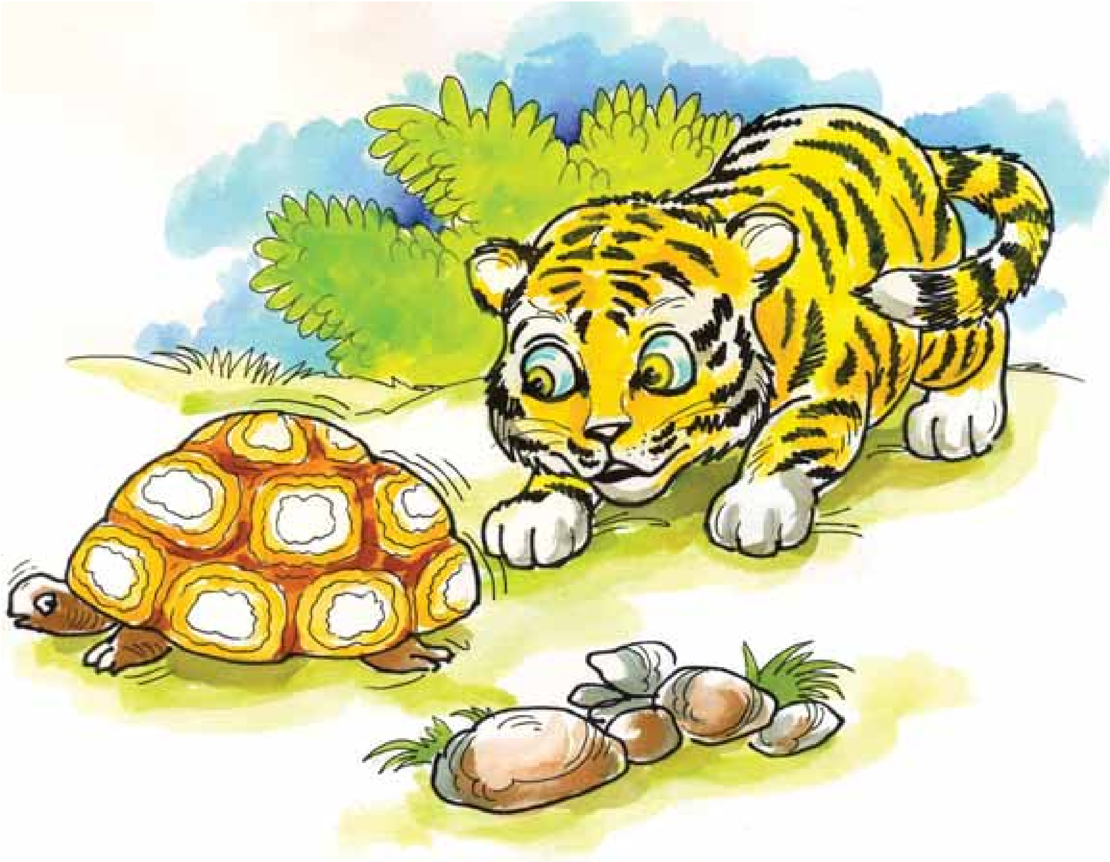

"मेरे साथ चलो...।" माँ के साथ शेरा पुराने रास्ते पर आगे बढ़ने लगा। दोनों घना जंगल पार कर समतल पैदा में आ गए। तालाब के नजदीक आकर शेरा जोर से चिल्लाया, "देखो... सामने देखो...! वह रहा चलता पत्थर!"

माँ ने तालाब की तरफ देखा। कछुआ पानी में उतर रहा था।

नादान शेरा के गाल पर थपकी देकर शेरनी माँ देर तक हँसती रही।

नारायण विला, जागृति, विहार, रिंग रोड
पोस्ट-नेहरूग्राम, देहरादून-248005
(उत्तराखण्ड)

* * * *
* * * *

A Gentle Clock

Prabir Kumar Pal

A Lock and a Clock lived together in a shop. But the Lock did not like the noise made by the Clock. One day the Lock got annoyed with Clock and began to insult him and said, "You have no manners. You always make noise. I cannot sleep because of you. Stop making noise or I shall kill you with my iron hands."

The Clock was very gentle. He said politely, "My friend, if I stop working, your life will also stop."

Hearing this, the Lock grew very furious and shouted, "You are a liar. My life does not depend on you. On the contrary, you are born out of me. You have taken the four main limbs of mine. They are 'L', 'O', 'C' and 'K'. You have only a curved face of your own. I am the giver of your life. Now stop your clamour."

It was midnight. The gentle Clock stopped running.

So the morning could not come. The master of the Lock did not come to open his shop. He kept on sleeping.

As a result, the Lock became extremely tired and his iron hands too became numb. He was about to die by hanging. He cried pitiously, "O! My dear

friend Clock, please help me, you live above my head. Please come down and lift me. Or I shall die."

Now a lizard peeped out from behind the Clock. He said to the Lock, "You insulted the Clock for nothing. You are a bad man. Be tolerant with your neighbours. His noise is very low. Besides, work is life. The Clock runs to bring rest for you during day-time and I get food at night because of him."

The Lock felt sorry for his mis-conduct. Now the Clock ran to save him and once again the morning came and the shopkeeper arrived to open his shop.

The Lock was freed and the three befriended thereafter.

Purbagopalpur Primary School
P.O. Bhadrapur, Birbhum
P.S. Nalhati (West Bengal)

A Festival of Reading for Children

NBT - Dharmshala Book Fair

The NBT-Dharmshala Book Fair was held at Police grounds, Dharmshala, Himachal Pradesh from 8 to 13 May 2013 in association with District Administration, Dharmshala. Shri C Palrasu, Deputy Commissioner of Kangra inaugurated the Fair. He hoped that the Book Fair would provide an opportunity to people of all segments of the society to glance through quality books written by the eminent authors. The inauguration was followed by the cultural show by students of the Lower Tibetan School which enthralled the audience.

A number of events aimed at promoting books, reading habit and creativity especially among children, young adults and general readers were conducted by the National Centre for Children's Literature, a wing of NBT. These included workshops, discussions, skits, interactive sessions and other literary and cultural shows.

A discussion on the topic *Education and Books* organized in association with the H P University Regional Study Center. Shri R.C. Kondal Director, H.P. Regional Study Centre was the chief guest on the occasion. He was of the view that books are our best friends. A show on *Reading Habit* was organized in association with Maharishi Vidya Mandir and Lower Tibetan Village School. A discussion on the topic *Interest in Books in the Indian Culture* was also held in which a large number of students from many schools participated.

On the concluding day, a presentation of folk dance forms

'Chamba' and 'Kulluvi Natti' by the students of Dronacharya College of Nursing added colour to the Book Fair and mesmerised the audience. In the evening, a Poets' Meet was also held.

Well-known authors, scholars, editors and poets who participated in these events included Dr Arvind Jha, Shri Norge Teytin, Dr Shekhar Sarkar, Shri Susheel Kumar 'Phool', Prof. Om Awasthi, Ms Rekha Dadhwal, Shri Vijay Kumar Puri, Shri Lalit Mohan Sharma, Shri Trilok Mehra, Ms Kanti Sood, Dr Gautam Sharma 'Vyathith', Dr Piyush Guleri, Dr Pratyush Guleri, Shri Manas Ranjan Mahapatra, Dr Sapna, Shri Luvneesh, Shri Pramod Sharma, Shri Vasudev Sharma, Ms Poonam Devi, Shri Chandra Shekhar Rana, Shri Rajeev Trigati, Shri Raj Kumar, Ms Ratna Kaul, Shri Navneet Sharma, Dr Jaya Pande, Dr Rajeev Sharma, Dr Yogendra Mishra, Ms Sailabala Mahapatra, Ms Saroj Parmar and Ms Asha Kumari among others.

In spite of bad weather, a large number of students, authors, scholars, journalists and people from all walks of life visited the Fair. Apart from NBT, many other publishers and booksellers exhibited books at the Fair and book lovers showed keen interest in buying a good number of quality books which are not easily accessible in this part of the country.

सफेद कबूतर

कामना सिंह

दो साल पहले की बात है। तब मैंने पहली कक्षा पास की थी। पापा का तबादला अहमदाबाद हुआ, तो हमें नये शहर में आना पड़ा था। नई कक्षा ही नहीं, नया शहर, नया स्कूल और नई सहेलियाँ। मेरा मन बिलकुल नहीं लगता था वहाँ। हमेशा अपनी पुरानी सहेलियाँ याद आती थीं।

एक दिन सुबह उठकर मैं बालकनी में गई, तो चौंक पड़ी। वहाँ एक कबूतर बैठा हुआ था। यह सफेद कबूतर यहाँ कैसे आया? अभी तक तो मुझे अपने आस-पास सभी सलेटी रंग के कबूतर दिखे थे।

जो भी हो, यह सफेद कबूतर बड़ा सुंदर था। मुझे इस पर तरस आया। बेचारा! शायद अपने साथियों से बिछुड़ गया था। मैंने एक कटोरी में पानी रख दिया। अनाज के कुछ

दाने भी बिखेर दिए। सफेद कबूतर ने उनकी तरफ देखा तक नहीं। डर के मारे वहाँ से उड़ा और पास वाले फ्लैट की बालकनी में बैठ गया।

मैं भी अंदर आ गई।

कई दिन बाद जब फिर बालकनी में गई, तो पहले से बैठा सफेद कबूतर मुझे देखकर वहाँ से उड़ गया। मेरी बालकनी से उड़कर वह सलेटी रंग के कबूतरों के एक झुंड में गया। पर वहाँ किसी ने उसमें रुचि न ली। वे इधर-उधर उड़ गए। सफेद कबूतर फिर अकेला-का-अकेला रह गया।

मैं बड़े कौतूहल से उसकी ओर देखती रही। वह अब उड़कर पड़ोसी की बालकनी में आ बैठा था। पर किसी काम से उनकी नौकरानी वहाँ आई, तो वह फिर उड़ा और एक खिड़की पर बैठ गया।

मैं समझ गई, एकदम अकेला है यह। मेरी तरह। मेरी भी तो इस नये स्कूल में अब तक कोई सहेली नहीं बनी थी। हर बार ऐसा ही होता है। पापा के ट्रांसफर की वजह से दीदी भी हमेशा यही शिकायत करती है।

एक दिन मैं कमरे में बैठी होमवर्क कर रही थी कि कौओं की काँव-काँव से मेरा ध्यान खिंचा। मैं उठकर बालकनी में आई। देखा, तो एक छोटे-से सलेटी रंग के कबूतर को दो-तीन कौवे मिलकर तंग कर रहे थे। उसे छोटा बच्चा जानकर वे उसे सता रहे थे। बाकी सलेटी कबूतर दूर से देख तो रहे थे, पर डर के मारे पास आने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। छोटा-सा बच्चा कबूतर कौओं की चोंच की चोट से अधमरा हो गया था।

अचानक खिड़की पर बैठा सफेद कबूतर उड़ा और उसने बदमाश कौओं पर हमला बोल दिया। इस अचानक मदद से छोटे कबूतर में भी हिम्मत आ गई। कौओं के अपने पास से हटते ही उसने सफेद कबूतर का साथ पकड़ा और वहाँ से भागकर जान बचा ली। अभी तक दूर से तमाशा देखने वाले बाकी सलेटी कबूतर भी उन दोनों के पास आ पहुँचे। तीनों कौवे समझ गए कि शिकार उनके हाथ से निकल गया है। वे खिसियाकर उड़ गए।

उस दिन के बाद सफेद कबूतर मुझे कभी अकेला नहीं दिखा। बच्चा कबूतर उसका दोस्त जो बन चुका था! बाकी सलेटी कबूतरों ने भी उससे नाता जोड़ लिया था। सफेद कबूतर अब न अकेला था और न उदास। मेरे हाथों रखा दाना-पानी भी उसने खाना शुरू कर दिया था।

मैं भी खुश थी। जान गई थी कि सभी को एक दिन दोस्त मिल जाते हैं। अपने नये शहर के नये स्कूल में अब मैं नई सहेली जरूर-जरूर पा पाऊँगी। सफेद कबूतर ने मुझमें नया भरोसा भर दिया था। सचमुच मुझे कुछ दिनों में वैभवी मिल गई थी।

फ्लैट नं.-903, ब्लॉक-1
टाइप-बी, पॉकेट-बी
मोतिया खान, नई दिल्ली-110055

The Great Indian Mathematical Wizard

Bano Sartaj Kazi

Shakuntala Devi is known as Human Computer, Mathematics Wizard etc. She is famous for her outstanding talent in solving complex mathematical problems without any mechanical help. She has been rated as one in 58 millions for her extraordinary ability by one of the fastests super computers ever invented – the Univac 1108. She herself thought, 'it is a God's Gift – a divine quality'.

Shakuntala Devi was born in Bengaluru on 4 November 1939 in a Brahmin family. She had no formal education but was interested in reading and writing.

She received lessons of mathematics from her grandfather. She made complex mental calculations as a child prodigy. She started showing her amazing quality at the age of three, and demonstrated her skills in Mysore University and Annamalai University when she was five.

Her father was a magician. Nobody in her family was interested in mathematics. Shakuntala Devi used to say, "None of my family showed any signs of the same head for figures, not even remotely."

Shakuntala Devi was an astrologer too. She has to her credit a book on astrology. Her passionate interest in exploring and expanding the learning capacity of the human mind led her to

develop the concept of mind-dynamics.

She had an ingenious ability to tell the day of the week of any given date in the last century in a short time.

She cast a spell adding a 16-digit number with another one and multiplying the result with an equal array of numbers finding the cube root of the resultant and gave an answer in just about the time taken for a wink.

In January 1977 at Methodist University, Texas, Shakuntala Devi extracted the 23rd root of 201 digit number only in 50 seconds while the fastest computer of the world Univac took 62 seconds. Her correct answer was 546372891.

In 1980, she multiplied two 13-digit numbers – 7,686,369,774,870 and 2,465,099,745,779, which was picked at random by the Computer Department of Imperial College, London. She answered the question in just 28 seconds. Her correct answer was 18,947,668,177,995,426,462,773,730. This extraordinary achievement found her a place in the Guinness Book of World Records.

Shakuntala Devi has written many books. All these have world-wide appreciation. Some of the books are:

- *Puzzles to Puzzle You*
- *More Puzzles to Puzzle You*
- *Fun with Numbers*
- *In the Wonderland of Numbers*
- *Mathability*
- *Book on Numbers*
- *Awaken the Genius in Your Child*
- *Astrology for You*
- *Figuring the Joy of Nature*
- *Master of Game*
- *Perfect Murder*

Shakuntala Devi travelled around the world with an aim to motivate the young minds to discover the world of mathematics and after that enjoying the world of mathematics.

Shakuntala Devi's mathematical talent was unique. She was known as human computer, but actually she was more than a computer. She was the creation of God, while computer has been made by human being.

The great daughter of India, breathed her last on 21 April 2013. Her departure from this world to heaven can better be described in the following Urdu couplet:

Hazaron Saal Nargis Apni Be-noori
Pe Roti Hai
Badi Mushkil Se Hota Hai Chaman
Mein Deeda-var Paida.

The couplet resonates the fact that a great woman like Shakuntala Devi is born in thousand years.

Former Principal
Jomata College of Education
Opp. Akashwani, Civil Lines
Chandrapur – 442401 (Maharashtra)

प्रेरक कथा

अनोखी सजा

बागान सरकार

सर्वोच्च न्यायालय का कुछ ही बरस पहले एक बड़ा ही महत्वपूर्ण निर्णय आया था–स्कूलों में विद्यार्थियों को शिक्षक शारीरिक दंड नहीं देंगे। लेकिन इतने बड़े देश में लाखों स्कूलों में इस पर कितना अमल होता होगा कहना मुश्किल है। लेकिन केरल के इदुक्की जिले के एक स्कूल में न केवल न्यायालय के इस निर्णय पर अमल हो रहा है बल्कि इससे एक कदम आगे जाकर स्कूल की शिक्षिका ने ऐसा आदर्श, ऐसी मिसाल समाज के सामने रखी है कि कोई भी संवेदनशील इनसान उस शिक्षिका के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हो जाएगा।

घटना यह घटी कि स्कूल के किसी छात्र की छात्रवृत्ति के रुपये गायब हो गए। रुपये वापसी की तमाम कोशिशें विफल हो जाने पर उस अध्यापिका ने भरी कक्षा में अपने ही हाथों पर तब तक डंडे बरसाए जब तक कि रुपये गायब करने वाले छात्र ने अपना अपराध नहीं स्वीकार कर लिया। रकम कोई बड़ी न थी–साढ़े छह सौ रुपये थे, पर लौटाने वाला छात्र केवल सौ रुपये ही लौटा पाया, जो उसके पास बच रहे थे।

उस कक्षा-अध्यापिका का नाम था–मीनाक्षी कुट्टी, जिसने भले गाँधी का 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' पुस्तक न पढ़ी हो, पर गाँधी की प्रेरणा से वशीभूत हो उसने 'आत्मसजा' जैसे एक अप्रचलित प्रयोग को अपने ऊपर आजमाया, जिसकी परिणति में प्रभावित छात्र के गायब रुपये वापस मिल गए। अपने शरीर को चोट पहुँचाकर अध्यापिका ने छात्र में सच का साहस पैदा किया। लेकिन घटना का समापन यहीं नहीं होता। अध्यापिका से, कक्षा से बाहर आने पर दो अन्य छात्रों ने पाँव पकड़कर माफी माँगी और

कहा कि इस अपराध के असली अपराधी वे दोनों हैं। अपराधी चाहे जो रहा हो/रहे हों महत्वपूर्ण यह था कि उसने/उन्होंने अपराध स्वीकार किए और वह भी बगैर शारीरिक प्रताड़ना के।

इसी घटना से मिलती-जुलती एक प्रेरक घटना सन् सत्तर के दशक (1970-80) की है। घटना पश्चिम बंगाल की है जहाँ एक विद्यालय में 7वीं कक्षा में बांग्ला भाषा के कक्षा-अध्यापक ने छात्रों द्वारा अभ्यास कार्य न करने की सजा स्वयं को दी। सामान्य तौर पर छात्रों द्वारा अभ्यास कार्य न करने पर उनकी छड़ी से पिटाई, मुर्गा बनाना, बेंच पर खड़ा करवा देना आदि सजा शिक्षक द्वारा दी जाती है, पर इस घटना में कक्षा-अध्यापक ने सभी छात्रों के सामने अपना सिर नीचे झुकाकर, किसी एक छात्र के हाथ में डस्टर देकर कहा, ''अब मेरे सिर पर मारो, जितनी जोर से मार सकते हो।'' यह सुनकर छात्र सन्न रह गए। बेहद लज्जित होकर सभी छात्र अध्यापक से क्षमायाचना करने लगे और 'आईंदा ऐसा न होगा' ऐसा कहने लगे।

ऐसे प्रेरक और आदर्श शिक्षक आज भी हमारे समाज में हैं जो 'आदर्श सजा' देकर अपने छात्रों का मन-मिजाज बदलने में विश्वास रखते हैं। दरअसल, अंतरात्मा सब में होती है, सवाल उसे जगाने, उसे उत्प्रेरित करने का है। दूसरे की गलती के लिए स्वयं को सजा देना दुर्लभ घटना होती है, पर जो ऐसा कर पाते हैं वे गलत करने वाले को जीवन भर के लिए एक आदर्श सबक सिखा देते हैं, वो भी उन्हें बगैर किसी सजा या प्रताड़ना के।

गौरैया

ओमप्रकाश बजाज

कहाँ चली गईं सारी गौरैया
नज़र कहीं नहीं आतीं

उनकी मीठी सुरीली चीं-चीं
अब सुनने में नहीं आती

रोशनदान में पंखे के ऊपर
अब वह घोंसला भी नहीं बनाती

कितना सूना-सूना-सा लगता
बिना गौरैया का आँगन!

जैसे खो गया हो अचानक
हमारा अपना कोई प्रियजन!

बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर
जबलपुर-482001
(मध्य प्रदेश)

किसी को भी छोटा न समझो

रश्मि कान्डेयांग

एक जंगल था। उसमें एक चींटी रहती थी। वह प्रतिदिन अपने भोजन की तलाश में चली जाती थी। उसके पीछे बाकी सभी चींटियाँ भी चली जाती थीं। उस जंगल में सभी जानवर बहुत खुश रहते थे। कोई किसी को नहीं सताता था, लेकिन उस जंगल में एक हाथी भी रहता था। वह चींटियों और जंगल में रहने वाले जानवरों को बहुत कष्ट देता था और तंग करता था। वह घमंडी तो था ही नटखट भी था। वह कभी पेड़ों को उखाड़कर उन पर फेंक देता था तो कभी अपने सूँड़ में पानी भरकर उन पर डाल देता। ये सब देखकर जानवर बहुत दुखी थे।

एक बार उस चींटी ने हाथी से कहा, ''तुम जानवरों को बहुत कष्ट देते हो। तुम अपने से छोटों को क्यों सताते हो?'' तब हाथी ने कहा, ''चुप रहो! तुम मुझसे छोटी हो, ज्यादा मत बोलो, वरना कुचल दूँगा।'' तब चींटी वापस चली आई। दूसरे दिन चींटी हाथियों के झुंड के पास गई और कहने लगी, ''आप उस हाथी से बड़े हैं। आप उसके बुजुर्ग हैं। वह हमारी बस्ती में आकर जानवरों को सताता है। आप उसे समझाइए कि वह ऐसे काम न करे।'' उन हाथियों ने जब यह सुना कि वह हाथी ऐसे काम करके उनकी बदनामी कर रहा है तो उन्होंने कहा कि वे उसे समझाने की कोशिश जरूर करेंगे। बहुत कोशिशों के बावजूद जब वह हाथी नहीं सुधरा तो एक दिन चींटी ने एक उपाय सोचा। उसने सोचा कि अगर इस बार वो नहीं माना तो उसे सबक सिखाना ही पड़ेगा।

फिर चींटी हाथी के पास आई और बोली, ''देखो, तुम जानवरों को तंग करना बंद कर दो, वरना इसका नतीजा ठीक नहीं होगा!'' हाथी को गुस्सा आया। इधर चींटी चुपके से हाथी के सूँड़ में घुस गई और उसे काटने लगी। पहले तो हाथी को पता नहीं चला लेकिन थोड़ी देर बाद जब वह परेशान हो गया तो चींटी से माफी माँगने लगा। कहने लगा, ''अब से मैं किसी भी जानवर को परेशान नहीं करूँगा। किसी को भी कष्ट नहीं पहुँचाऊँगा, लेकिन प्लीज तुम बाहर निकल आओ, वरना मैं ऐसे ही परेशान होकर और तड़प-तड़पकर मर जाऊँगा।'' तब चींटी उसके सूँड़ से बाहर निकल गई और हाथी को माफ कर दिया। इस प्रकार फिर से जंगल में मंगल हुआ। सब जानवर खुशी से रहने लगे।

पाठक मंच, दर्शन मेला म्यूजियम, इंडिया
पोस्ट बॉक्स नं.-19, चाईबासा-833201
पश्चिमी सिंहभूम (झारखंड)

A Trip to Moon

R.N. Kobra

Once Neelu and all the pupils of a great science teacher asked him, nay, insisted, persisted and forced him to take them to the moon. The teacher gave in and funds were raised and NASA of America agreed to fulfill the desire of the children who were eager to go to the moon.

The teacher along with his pupils got into a rocket. As the rocket launched, the children were so happy that they started dancing with joy and sang songs.

The rocket darted off. They looked at the earth below which very soon looked like a map only.

The rocket landed on the moon. They all came out. One of the children wanted to speak something but he could only move his lips. The same happened with others. None could speak or hear anything.

The teacher connected them through transmitters and receivers and told them, “Dear children, there is no air, so there is no medium for sound to travel and hence you can’t speak or hear anything without electronic devices.”

Then the teacher said, “Neelam and Rohit, go into the rocket and bring the

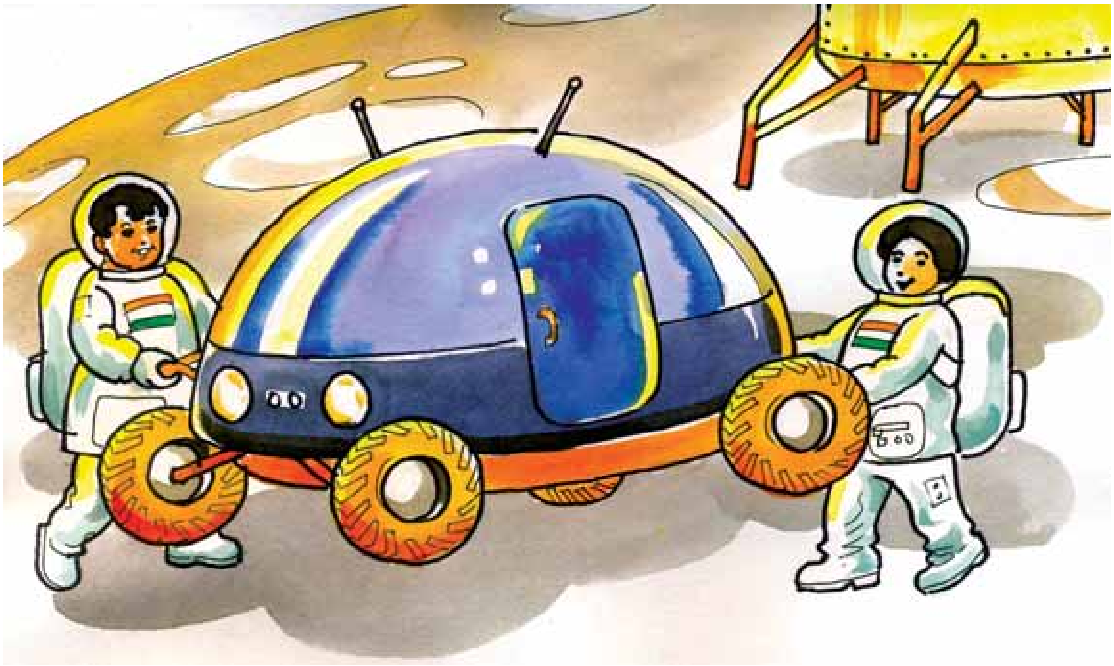

Moon Car." Neelam said, " Sir that is too heavy for two of us to lift". The teacher said, "Don't argue, go at once and do what I say."

Unwillingly, the children went and it was a big surprise for them that they could lift and carry the Moon Car easily.

On asking how it could be possible? The teacher said. "Listen, the moon is much smaller than the earth. It is only one-sixth of the earth, so its gravitational force is also one-sixth of the earth. The weight of the Moon Car is only one-sixth here as compared to the weight on earth. On earth twelve children were needed to lift the car, whereas only two of you can do this here." They all understood the phenomenon.

While walking here and there they reached near a deep ditch. How to jump over the ditch was a problem. The teacher asked them to jump it over but none could dare. Then the teacher jumped it over with almost no effort.

They all wondered at the big long jump of their not so young teacher. He explained that "due to less gravitational force any one can have a very big or high jump here as you are pulled down with less force." They understood and all of them jumped over the ditch easily.

Sachin asked, "Sir, why is no living being here?" The teacher replied, "there is no air, no oxygen and no water therefore no life. Since ozone layer is also not present here, the cosmic rays can destroy anything. But don't worry you are safe in your capsule-suit."

They also asked about a big planet that was rising and setting. The teacher explained that it was their own earth which looked so beautiful from the moon. The earth looked blue in colour because of big oceans.

The night there, was extremely cold. Even in the shade it was very cold during the day. The teacher explained that it was due to the fact that there was no conduction or convection of heat. So it was extremely hot or extremely cold.

The stars looked bright. The teacher told them that it was due to absence of dust particles and air.

Suddenly, Neelu heard a big explosion and was afraid that they would all die. In fear, her eyes opened and she found herself on the bed. A boy had cracked a fire-work as it was Diwali season. Although it was just a dream but Neelu was happy to have learnt about life at the moon. She wished, if the dream had been a little longer.

A-438, Kishore Kutir
Vaishali Nagar, Jaipur-302021
(Rajasthan)

पापा, कब आओगे?

पापा के नाम मानसी का पत्र

मुकेश शर्मा

प्यारे पापा,

आप कैसे हैं? मुझे आपकी बहुत याद आती है। आप कब आओगे? मम्मी कहती है आप बहुत दूर स्कूल में गए हो, स्कूल में ही रहते हो। पापा, आप स्कूल में क्यों रहते हो? वहाँ आपको खाना कौन देगा, मम्मी तो यहाँ पर है! मम्मी ने कहा है कि जब पापा घर आएँगे तो हम सब घूमने जाएँगे, उसी झूलों वाले पार्क में। और ये सुमित को फोन करके अच्छे-से डाँटो, ये मुझे खेलने नहीं देता। वो जो नई वाली किताब मम्मी लाई थी न, वो भी इसने फाड़ दी है। जब भी मैं कुछ खेलने लगती हूँ न, तो ये भी वही चीज खेलने के लिए आ जाता है और कहता है कि पहले मैं खेलूँगा। और कुछ भी कहूँ तो तेज-तेज चिल्लाने लगता है, रोने लगता है। मम्मी कहती है कि इसे मैंने मारा है। फिर मम्मी भी मुझे डाँटती है। पापा, जल्दी आ जाओ न!

पापा, मुझे आपका स्कूल बहुत अच्छा लगा था। याद है न, जब पहले दिन मुझे आप स्कूल में ले गए थे! आप तो काम कर रहे थे, लेकिन मैं झूला झूल रही थी। आपके स्कूल में बहुत अच्छे झूले हैं और जब मैं अगले दिन बड़ी मैडम के पास गई थी तो उन्होंने मुझे टॉफी दी थी। वो भी बहुत अच्छी हैं। पापा, हमारी मैडम ने मुझे अच्छे-से लिखने को कहा है। मैं भी कोशिश तो बहुत करती हूँ लेकिन गलती हो ही जाती है। अक्षर लाइनों के कभी ऊपर तो कभी नीचे निकल आते हैं। जब आप हाथ पकड़कर लिखवाते हो तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। पापा, कब आओगे?

पापा, जब आप मुझे छोटी साइकिल से झुला रहे थे तो मैं बहुत हँस रही थी। तभी मेरे पैर का अँगूठा साइकिल की चेन में आ गया था और तब बहुत खून निकला था, मैं रो रही थी। आप तेजी से मुझे डॉक्टर के पास ले गए थे और मरहम-पट्टी करवाई थी और दवा दिलवाई थी। आप बार-बार कह रहे थे, "मानसी, बेटा, मुझे माफ कर दे।" आपको याद है न! मैंने भी कहा था, "पापा, माफ किया।"

पापा, आपके संग खेलने में अच्छा लगता है। जल्दी आ जाओ न! सच्ची बताऊँ, मुझे रोज लगता है मेरे पापा आज घर आ जाएँगे, लेकिन आप नहीं आते। और रोज ही रात को मम्मी कह देती है तेरे पापा कल आ जाएँगे। पापा, आप जब घर में होते हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। सुमित भी आपको याद करता है। आप और मम्मी कब हमें घुमाने ले जाओगे? पापा, बस, अब जल्दी आ जाओ!

आपकी बेटी,
मानसी

यू-27, बुद्ध विहार, फेज-I
दिल्ली-110086

The Dinosaurs

Sudha Puri

In the last issue, you read how Chitra befriends her two stuffed toys, the dinosaurs, and tells them about some of the festivals like Bihu, Hola & Navratras that are celebrated in India. She asks them how they became extinct. They tell her that due to bad weather conditions their herbivorous and carnivorous varieties could not survive. Read next ...

"You mean, no photosynthesis ...," said Chitra intelligently and thanked her science teacher in her heart.

" ... and may be, many other animals may have lost their habitat later, with the development of the apes into the man and his indiscriminate cutting of the forests," replied Hola in a serious tone.

"Oh, you know quite a lot for such ancient beings ... by the way, seeing you enjoying the fruits, I am guessing that you are herbivorous dinosaurs like the Suropods, Ankylosaurs, Stegosaurs, Hardosaurs ..."

"Orinthopods, Ceratopsians, Titanosaurs ...," Hola added trying to help. "Yes and they too, and there is no danger to me, because I remember reading about the carnivorous dinosaurs, that they were very vicious and often attacked the herbivorous ones, taking giant leaps or flying with their wing like structures on their backs ...," said Chitra.

"You need not be afraid of us...," said Bihu a little unsurely, glancing at Hola. "Oh, so you are herbivorous?" Chitra asked again.

"Actually, yes and no," said Bihu with a naughty smile, "actually, hmm, ... we are ... we are the Orinthomimus variety ...," announced Hola assertively.

"But what does that mean?" asked Chitra.

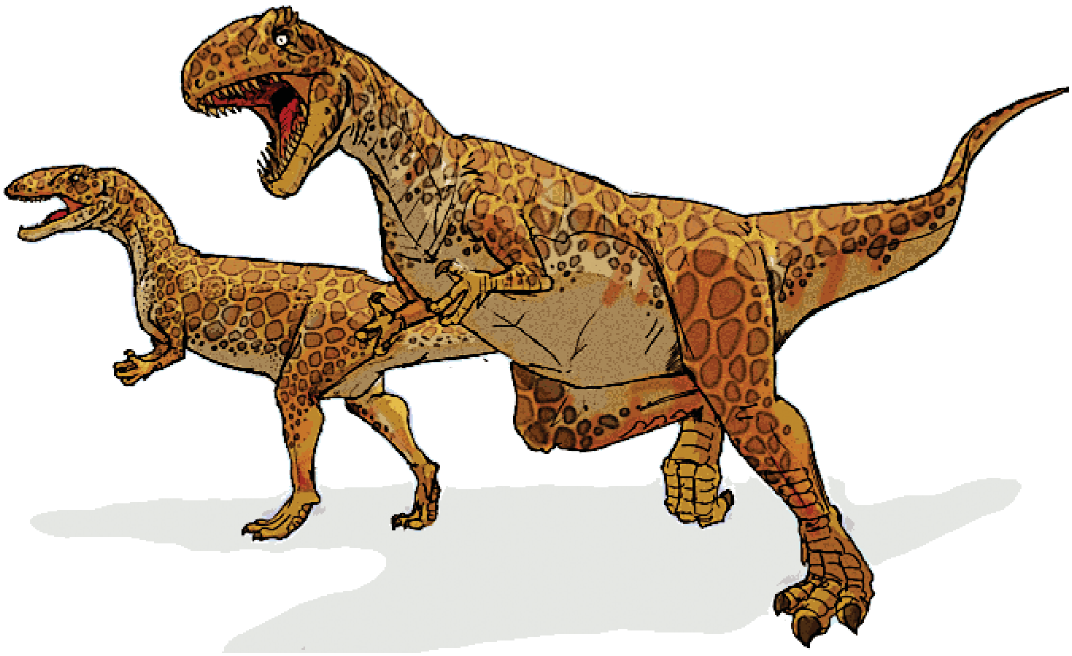

"Well, as you can see we do not have prominent teeth and from a distance we look like your present times Ostrich bird, and our face resembles the beak of a bird ...," Hola's shrill voice was cut short, as Chitra interrupted.

"What do you mean?" asked Chitra feeling a strange fear creeping up in her as she felt glued to her seat too near the huge dinosaurs.

"You see we are omnivorous. We eat both vegetables and the meat," Bihu's chuckling voice trailed off as if going very far away.

Chitra felt as if she was shaking with fear and someone was calling out her name and she was unable to move and she shut her eyes tightly, thinking doing this would transform the real dinosaurs into the harmless toys.

She heard her *Dadi* muttering to herself, "how many times I have told you not to watch that animal programme before sleeping ... Chitra! Chitra! wake up, you are moaning in your sleep ..."

Chitra woke up with a start and sipped the water from the glass that her *Dadi* was holding for her. Her heart was beating fast. She got down from the bed and went in the drawing room. The dinosaurs were in their basket. She clapped her hands in delight and they started laughing uncontrollably.

sudha.puri3@gmail.com

कहानी पोस्टकार्ड की

तपेश भौमिक

कुछ वर्ष पहले तक आम आदमी के लिए पोस्टकार्ड पत्र भेजने का एक सुलभ और सस्ता साधन था, लेकिन आज इसकी स्थिति काफी निराशाजनक है। इस पोस्टकार्ड की जन्म स्थली है ऑस्ट्रिया। अर्थशास्त्र के एक अध्यापक ने पहले-पहल समाचार पत्र में पोस्टकार्ड जैसी किसी चीज के बारे में एक लेख लिखा। ये जनाब थे इम्यानुएल हेरमैन। ये उन दिनों मितव्ययिता को लेकर समाचार पत्रों में लेख लिख रहे थे। फिर इसी बात पर पत्र भेजने के लिए एक सस्ते माध्यम के विषय पर भी लेख लिखा, जो काफी चर्चा का विषय बन गया। यह लेख 26 जनवरी, 1868 को एक पत्रिका में छपा था। एक पोस्टमास्टर जनरल को यह बात खूब जँची। बस क्या था! उन्होंने बात आगे बढ़ाई। डाक विभाग ने ग्रीटिंग कार्ड को ध्यान में रखकर हलके बादामी रंग का एक कार्ड बनाया, जिसके एक पृष्ठ पर डाक विभाग का प्रतीक तथा मूल्य अंकित था।

यह पोस्टकार्ड सफलता की उन ऊँचाइयों को भी पार कर गया जिसकी कल्पना न तो अध्यापक ने की थी और न पोस्टमास्टर जनरल ने। डाकघरों में इसे खरीदने के लिए लंबी लाइनें लगने लगीं। बात यहाँ तक आगे बढ़ी कि भीड़ पर काबू पाने के लिए पुलिस को लाठी चार्ज भी करनी पड़ी।

अन्य देश भी पीछे नहीं रहे। 1870 में जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन ने, 1872 में बेल्जियम, डेनमार्क, कनाडा, नीदरलैंड्स तथा 1873 में श्रीलंका, नार्वे, स्वीडन तथा रूस ने पोस्टकार्ड का प्रचलन आरंभ कर दिया। हमारे देश में 1879 में पोस्टकार्ड का प्रचलन आरंभ हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कई देशों में पोस्टकार्ड की बिक्री काफी बढ़ गई थी।

आज इंटरनेट और मोबाइल मैसेज की चलती के कारण पोस्टकार्ड की स्थिति अजायबघर में जाने की हो गई है। पोस्टकार्ड को फिर से उपयोगी बनाने के लिए इसे ग्रीटिंग कार्ड का रूप देना उचित होगा। इस रूप में इसका मूल्य एक से दो रुपये तक रखा जा सकता है। इसके लिए इसके रूप-रंग में भी निखार लाना जरूरी होगा।

आनन्दलोक मॉडल स्कूल
पो. गुड़ियाहाटी, कूचविहार-736101 (पश्चिम बंगाल)

बच्चों के लिए खेल गीत

भागा चोर उचक्का!

शंकर सुल्तानपुरी

भागा चोर उचक्का!
लाई, लावा, लक्का,
गाँव से आए कक्का,
लाए मक्की-मक्का
आम रसीले पक्का।

क्रिकेट खेलते नक्का,
मारे चौका, छक्का,
चला रेल का चक्का,
पहुँचे चचा फरक्का।

ठुक-ठुक करें, न ठक्का,
दें न किसी को धक्का,
भागा चोर उचक्का,
हम तो हक्का-बक्का!

साहित्य वाटिका
13/362, इंदिरानगर,
लखनऊ-226016
(उत्तर प्रदेश)

खुद करके देखो

बंद आँखों की कलाकारी

आइवर यूशिएल

- **बच्चों का आयु वर्ग :**
  8 से 11 वर्ष
- **बच्चों की कुल संख्या :**
  जितने चाहो उतने
- **खेल के लिए सामान :**
  घोड़े या गधे का एक चित्र, पेंसिल, आँखों पर बाँधने के लिए रूमाल
- **ऐसे खेलो यह खेल :**

कमरे की किसी दीवार पर अपने घोड़े के चित्र को लटका दो। इसे सीधा रखने के लिए इसके पीछे की ओर गत्ता या कार्डबोर्ड चिपकाना पड़े तो यह भी कर डालो। वैसे, चित्र को दरवाज़े आदि पर टेप से भी लगाया जा सकता है।

तुम यदि चित्र खुद बना रहे हो तो इसकी दुम मत बनाना। हाँ, बना-बनाया मिल गया है यह तुम्हें तो दुम के ऊपर कागज़ ज़रूर चिपका देना।

अब खेल में शामिल होने वाले सदस्यों को इस चित्र के सामने लाइन में खड़ा होना है। फिर चित्र को ध्यान से देखने के बाद आँखों पर पट्टी बाँधकर पेंसिल की सहायता से तस्वीर पर हाथ लगाए बिना हर खिलाड़ी इस जानवर की दुम को इसकी सही जगह पर बनाने की कोशिश करेगा।

इस तरह की जाने वाली कोशिशों को देखकर दूसरे बच्चों की हँसी छूट जानी स्वाभाविक होगी, क्योंकि कोई खिलाड़ी घोड़े के मुँह पर दुम बना देगा तो कोई इसकी पीठ पर।

दुम को इसकी बिलकुल सही जगह या उसके सबसे करीब बनाने वाला खिलाड़ी विजयी घोषित होगा।

- **ध्यान रखना :**

चित्र को दीवार पर कीलों से या किसी भी ऐसी तरह लगाने की कोशिश नहीं की जानी चाहिए कि चित्र हटाने पर दीवार पर बने निशान देखकर घर में आगे से तुम्हें यह खेल खेलने के लिए मना कर दिया जाए।

Book Review

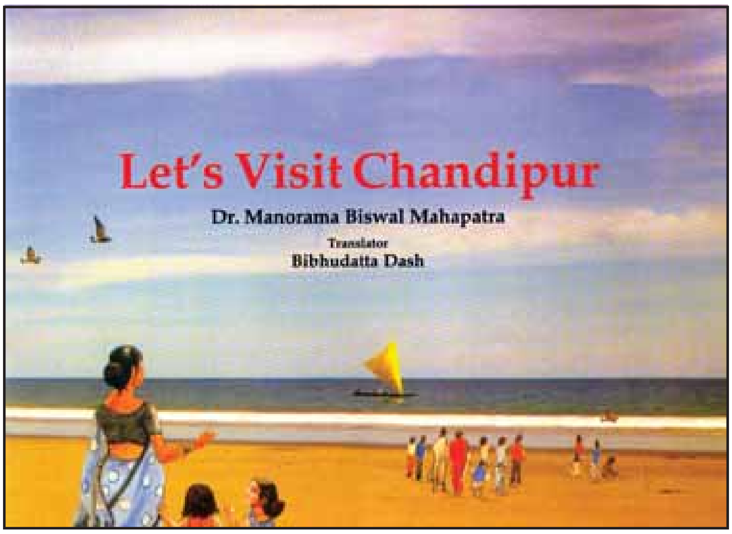

Originally written in Odia, the book with illustrations takes readers to a journey from Bhubaneshwar to Chandipur along with the characters — Gungun and Thumuri.

Both sisters get excited when their mother tells them that they will visit Chandipur Beach near Balasore. Their mother also provides them vital information about two rivers that flow in Balasore, historical significance of the Mallikashpur Village, Kshirachora Gopinath Temple etc.

While travelling towards the beach, they come across cities like Cuttack, Bhadrak and Chandikhol. Gungun and Thumuri ask endless questions and admire the beauty of the nature. The variety of flowers, trees, animals and birds that they see on their way, makes them happy and they finally reach their destination.

The author of the book has given detailed information about the most favoured destination of tourists in Odisha. It is a useful guide for readers who wish to learn about different aspects of Odisha and visit Chandipur which is fifteen kilometers away from Balasore.

Let's Visit Chandipur
Dr. Manorama Biswal Mahapatra
Bibhuddatta Dash (*Tr.*)
Jantak Press
Rs. 30.00

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date :. 20/21 Same Month
Date of Publication:14/07/2013

नई दिल्ली
विश्व पुस्तक मेला
15 - 23 फरवरी 2014
प्रगति मैदान

नए प्रकाशन : पढ़ते जाएं, बढ़ते जाएं

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के प्रकाशन

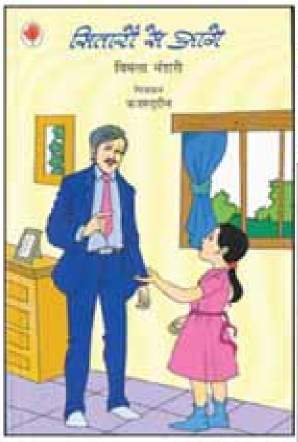

सितारों से आगे
विमला भंडारी
पृ. 102 रु. 35.00
ISBN 978-81-237-6606-5

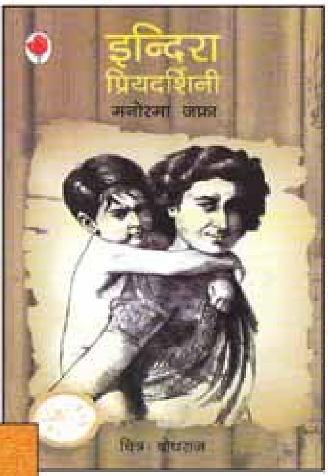

इन्दिरा प्रियदर्शिनी
मनोरमा जफ़ा
पृ. 72 रु. 30.00
ISBN 978-81-237-6494-4

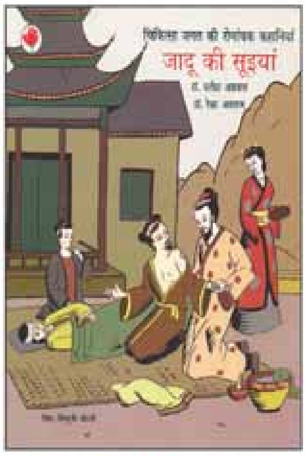

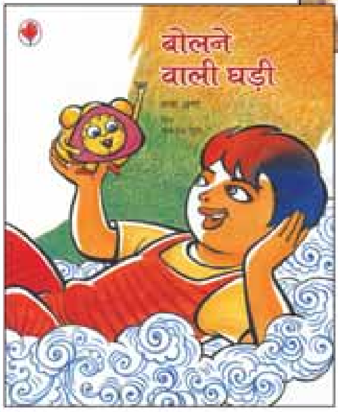

बोलने वाली घड़ी
क्षमा शर्मा
पृ. 16 रु. 25.00
ISBN 978-81-237-6697-3

जादू की सूइयां
डॉ. यतीश अग्रवाल
डॉ. रेखा अग्रवाल
पृ. 72 रु. 75.00
ISBN 978-81-237-6640-9

मेट्रो का मजा
पंकज चतुर्वेदी
पृ. 16 रु. 25.00
ISBN 978-81-237-6702-4

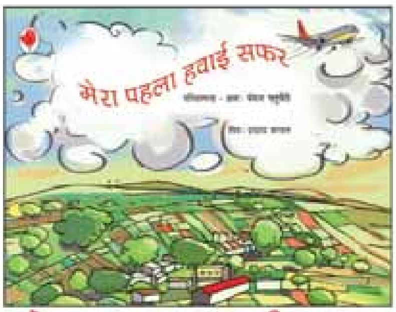

मेरा पहला हवाई सफर
परिकल्पना – शब्द : पंकज चतुर्वेदी
पृ. 16 रु. 30.00
ISBN 978-81-237-6695-9

नेशनल बुक ट्रस्ट
की चुनिंदा पुस्तकें
आदेश हेतु
ऑनलाइन भी उपलब्ध

**नेशनल बुक ट्रस्ट
किताब क्लब के सदस्य बनें और
नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रकाशनों
पर 20 प्रतिशत की छूट पाएं**

अधिक जानकारी के लिए
कृपया संपर्क करें :

एक: सूते सकलम्
NBT INDIA

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया,
फेज-II, वसंत कुंज,
नई दिल्ली-110070
दूरभाष : 91-11-26707700
फैक्स : 91-11-26121883
ई-मेल : nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : http://www.nbtindia.gov.in

मुंबई : दूरभाष व फैक्स : 91-22-23720442
ई-मेल : wro.nbt@nic.in
बंगलुरु : दूरभाष व फैक्स : 91-80-26711994
ई-मेल : sro.nbt@nic.in
कोलकाता : दूरभाष व फैक्स : 91-33-22413899
ई-मेल : ero.nbt@nic.in

www.nbtindia.gov.in ● facebook.com/nationalbooktrustindia